हंसता हुआ धर्म

मुल्ला नसरुद्दीन एक रात ज्यादा पी कर मधुशाला से निकला। ठीक-ठाक दिखायी नहीं पड़ रहा था कहां जाए। बामुश्किल तो मधुशाला के नौकरों ने उसे अपनी कार तक पहुंचाया। लगभग आधे घंटे मेहनत कर के किसी तरह उसने चाबी कार में लगाई। फिर किसी तरह गाड़ी को पुरानी आदतवश चला भी लिया। लेकिन तब सवाल उठा कि जाना कहां है? घर कहां है? ये गांव कौन सा है? बड़े दार्शनिक सवाल उठने लगे। तब एक ही उपाय था, कि किसी के पीछे हो लूं। एक कार के पीछे हो लिया। प्रसन्न था। अब सब ठीक है। कहीं तो जा रहे हैं और न केवल जा रहे हैं, बड़ी तेज गति से जा रहे हैं। चित्त प्रसन्न था। और जो होना था वह हुआ। आखिर में जाकर वह उस कार से टकरा गया। तो उसने चिल्ला कर कहा, कि क्या मामला है? इशारा क्यों नहीं दिया, कि गाड़ी खड़ी करते हो? उस आदमी ने बाहर सिर निकाल कर कहा कि अपने ही गैरेज में इशारा देने की जरूरत है?

मुल्ला नसरुद्दीन को फुटबाल का बहुत शौक था। वह फुटबाल का दीवाना था। पत्नी परेशान हो गई थी। क्योंकि वह दिन में बैठकर कुर्सी पर भी लातें फटकारता था—फुटबाल! रात सोता तो भी सपने में लातें फेंकता, और उधम मचाता। पत्नी डाक्टर के पास गई और उसने कहा, बहुत हो गया। अब इस फुटबाल का इलाज करना ही पड़ेगा। तो डाक्टर ने उसे दवा दी, कि यह ट्रेंक्विलाइजर है। इसकी एक गोली दे दोगी, तो रात भर मुल्ला शांत रहेगा।

पत्नी घर आ गई। उसने मुल्ला से कहा कि यह गोली मैं ले आई हूं। तुम शांति से सो सकोगे। रात सोते वक्त इसे लेना है। मुल्ला ने कहा कि आज न लूं और कल लूं तो कोई हर्जा? उसकी पत्नी ने कहा, क्यों? उसने कहा, आज फाइनल मैच है सपने में!

मुल्ला नसरुद्दीन का एक मित्र मर रहा था। मित्र एक बड़ा मौलवी था, पंडित था। लेकिन मरते वक्त उसे भी कठिनाई होने लगी। क्योंकि पांडित्य मृत्यु में तो साथ नहीं देता। वह डरा। अब तक तो कहता रहा, कि ईश्वर है, यह है, वह है—सब सिद्धांत। लेकिन अब उसे समझ में न आया कि क्या करे! मौत करीब आ गई। क्षण भर की देरी है, क्या होगा? क्या न होगा?

किसी ने कहा, तुम मुल्ला को क्यों नहीं बुला लेते? वह बड़ा ज्ञानी है। मरता क्या न करता। उसने कहा, ठीक है, चलो बुला लो। नसरुद्दीन को संदेह तो था। भरोसा तो था नहीं। लेकिन कोई हर्जा नहीं। नसरुद्दीन आया और उसने कहा, 'ठीक। तुम प्रार्थना करो कि, हे परमात्मा! हे शैतान! मुझे संभाल।' उसने कहा कि यह किस प्रकार की प्रार्थना है? नसरुद्दीन ने कहा कि मरते वक्त खतरा लेना उचित नहीं। पता नहीं परमात्मा हो या न हो। और पता नहीं; शैतान ही हो। तुम दोनों से ही प्रार्थना कर लो। जो भी होगा, सहायता करेगा। इस घड़ी में किसी को नाराज करना ठीक नहीं।

मुल्ला नसरुद्दीन के गांव में एक सर्कस आया था और उसने सर्कस में दरख्वास्त दी। कोई और काम मिल नहीं रहा था, उसने सोचा, सर्कस में भर्ती हो जाए। दरख्वास्त में उसने लिखा कि मैं दुनिया का सबसे बड़ा ठिगना आदमी हूं। मैनेजर भी थोड़ा चकित हुआ, कि यह किस तरह का आदमी है? सबसे बड़ा ठिगना आदमी? बुलाने योग्य है। नसरुद्दीन को बुलाया। जब नसरुद्दीन वहां जा कर खड़े हुए तो मैनेजर भी थोड़ा परेशान हुआ। होंगे कम से कम छह फीट चार इंच। उसने कहा, तुम अपने को ठिगना आदमी कहते हो? उसने कहा, मैंने पहले ही लिखा है, सबसे बड़ा ठिगना आदमी।

(ओशो की पुस्तकों से संकलित)